ओ३म्

दोद्यान के चुने हुए फूल

[वेदोद्यानादवचितानि कुसुमानि]

लेखक—

प्रियव्रत वेदवाचस्पति

आचार्य, गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी।

सम्वत

२०११

प्रकाशक—

प्रकाशन मन्दिर,
गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ी,
हरिद्वार।

सन् १९५४

[कॉपीराइट-गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी]

मुद्रक—

श्री रामेश ये
गुरुकुल मुद्रणालय
गुरुकुल कांगड़ी

गुरुकुल स्वाध्याय-मञ्जरी का २३वाँ पुष्प

श्रद्धानन्द-स्मारकनिधि के सदस्यों की सेवा में—

प्रिय महोदय !

नये वर्ष के साथ स्वाध्याय-मञ्जरी का यह २३ वाँ पुष्प आपको समर्पित है। महर्षि पतञ्जलि ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ महाभाष्य में एक स्थान पर वेदों के सम्बन्ध में लिखते हुए कहा है कि 'एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुग् भवति'। अर्थात् यदि वेद के एक शब्द को भी भली-भांति समझ लिया जाये और समझ कर उसके अनुसार आचरण किया जाये तो वह हमारे इस संसार को स्वर्ग बनाने की शक्ति रखता है तथा हमारे लिये कामधेनु बन जाता है। वेद के एक-एक शब्द में हमारे जीवन को सुन्दर और सफल बनाने की इतनी शक्ति है ! यदि वेद के किसी एक पूरे मन्त्र, पूरे सूक्त, पूरे मण्डल, कांड या अध्याय और अन्त में पूरे वेद को ही कोई भली-भांति समझ ले और उसके अनुसार अपना आचरण भी बना ले तो उसे जो सुख-मंगल प्राप्त होगा उसकी तो कल्पना भी सुगमता से नहीं की जा सकती। तब तो हमारा जीवन सर्वथा दिव्य हो जायेगा। भगवान् वेद ऐसा महिमाशाली है ! 'वेदोद्यान के चुने हुए फूल' में भिन्न-भिन्न विषयों से सम्बन्ध रखने वाले कुछ महत्वपूर्ण वेद-मन्त्रों और सूक्तों का संग्रह किया गया है। इनमें से एक-एक मन्त्र निराला उपदेश देने वाला है। एक-एक मन्त्र और उसके एक-एक शब्द में हमारे जीवन को महान् बना देने की शक्ति है। यदि पाठक इन मन्त्रों का गम्भीरता से स्वाध्याय करेंगे और इनमें दी गई शिक्षा के अनुसार अपना अमली जीवन ढालने का प्रयत्न करेंगे तो उनका यह संसार भी स्वर्ग बन जायेगा और वे भगवान् के दर्शन पाकर उन रस-निधि के साक्षात्कार से मिलने वाले परम-आनन्द-समुद्र में निमग्न रहने के अधिकारी भी बन जायेंगे।

इसी अभिप्राय से सम्वत् २०११ की यह भेंट आपको समर्पित की जा रही है। यदि इन वेदोद्यान के चुने हुए फूलों के स्वाध्याय से आपकी आध्यात्मिक भूख की कुछ भी परितृप्ति हो सकी तो मैं गुरुकुल की इस भेंट को सार्थक समझूंगा।

प्रियव्रत वेदवाचस्पति
आचार्य
गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी।

वैशाख २०११

विषय-सूची

—

विषय

विषय-सूची

विषय

विषय	पृष्ठ

पृष्ठ

☆

भूमिका

स्वतन्त्र भारत और उसका विकास

लगभग एक हजार साल की पराधीनता और गुलामी के पश्चात् महात्मा गान्धी जी जैसे महान् नेताओं और लाखों देशभक्त कार्यकर्ताओं के प्रयत्न एवं बलिदानों तथा परमात्मा की कृपा के परिणामस्वरूप आज हमारा भारतवर्ष देश स्वतन्त्र है। इस स्वतन्त्रता से लाभ उठा कर हम भारतवासी आज अपने राष्ट्र को जितना चाहें उन्नत कर सकते हैं। जब तक हम परतन्त्र थे हमें अपनी पूर्ण उन्नति और विकास का अवसर नहीं था। उस समय विदेशी शासक हमे वहीं तक कोई काम करने और किसी दिशा मे बढ़ने देते थे, जहां तक वैसा करना उन विदेशी शासकों के स्वार्थों के विरुद्ध नहीं होता था प्रत्युत उनके स्वार्थों की पूर्ति में सहायक होता था। उस समय हम एक अतिसीमित दायरे में ही कुछ कर सकते और बढ़ सकते थे। उस समय हमारी वृद्धि लगभग सर्वथा अवरुद्ध थी। तब हम अपनी पूर्ण उन्नति और पूर्ण विकास नहीं कर सकते थे। पर अब स्वतन्त्र हो जाने पर हम अपने राष्ट्र की सब प्रकार की भौतिक उन्नति और अपने राष्ट्र के निवासियों के आत्मा का सब प्रकार का विकास अपनी इच्छानुसार परिपूर्ण मात्रा में कर सकते हैं। अब हमारी उन्नति और विकास को बाहर की कोई शक्ति अवरुद्ध नहीं कर सकती।

विकास की दो दिशायें

परन्तु प्रश्न यह है कि हम यदि इस स्वाधीनता की अवस्था का लाभ उठाकर अपने राष्ट्र को उन्नत और विकसित करना चाहते हैं तो उस उन्नति और विकास का स्वरूप किस प्रकार का होगा? उस उन्नति और विकास की दिशा कैसी होगी? हम अपने राष्ट्र के भौतिक साधनों की जो उन्नति करेंगे और उससे राष्ट्र में जो वैभव-सम्पत्ति उत्पन्न होगी उसका लक्ष्य क्या होगा? उसके साधन किस प्रकार के होंगे? उस का किस प्रकार का उपयोग होगा? किसी भी प्रकार का कार्य करने के लिये, किसी भी प्रकार की भौतिक उन्नति करने के लिये हमारे मन और आत्मा का एक विशेष प्रकार का विकास होना आवश्यक है। और फिर इस भौतिक उन्नति से प्राप्त होने वाले वैभव और शक्ति का सही उपयोग करने के लिये भी हमारे आत्मा का एक विशेष प्रकार का विकास होना आवश्यक है। भौतिक उन्नति करने से हमें जो वैभव प्राप्त होगा उसे हम केवल अपने ही सुख-आराम का साधन बनायेंगे या उसके द्वारा हम अपने पड़ोसियों के जीवन

को भी सुखी बनाने का प्रयत्न करेंगे? इस वैभव का उपयोग हम केवल स्वार्थवृत्ति से करेंगे या उसके उपयोग मे परार्थवृत्ति भी साथ रहेगी? यह वैभव हमे भोगी, विलासी, विषय-लोलुप, इन्द्रियों का गुलाम और शिश्नोदर-परायण तो नहीं बना देगा और ऐसा बनाकर हमे अशक्त, दुर्बल और रोगी तो नहीं कर देगा? राष्ट्र के भौतिक साधनो की उन्नति करने से हमे जो शक्ति प्राप्त होगी उस शक्ति का उपयोग हम किस प्रकार का करेंगे? क्या हम उस शक्ति को दूसरो के अधिकारों को हड़पने मे, दूसरों की स्वतन्त्रता को छीन कर उन्हें अपना गुलाम बनाने मे, दूसरों की समृद्धि को छीन कर उन्हें निर्धन बनाने में, दूसरों के स्वार्थों, सुख और आनन्द को नष्ट करके उन्हें दु:ख और विषाद मे निमग्न करने में प्रयुक्त करेंगे? या हमारी यह शक्ति अन्याय के विरुद्ध लड़ने में, जिन के अधिकार मारे जा रहे है उनके अधिकारों की रक्षा करने में, जिन की स्वतन्त्रता छीनी जा रही है उन की स्वतन्त्रता को बचाने में, जिन्हें पद-दलित किया जा रहा है उन्हें उठाने मे, जिन के सुखों को नष्ट किया जा रहा है उनके जीवनों को फिर से सुखी बनाने में, लगाई जायेगी? हम अपनी यह शक्ति संसार को नरक की भट्टी बनाने में खर्च करेंगे या स्वर्गधाम बनाने में?

इस प्रश्न का उत्तर इस बात पर अवलम्बित है कि हमारा आत्मा किस प्रकार का है, हमारे आत्मा की शिक्षा और साधना कैसी है, हमारे आत्मा का विकास किस प्रकार का हुआ है। हमारे आत्मा की एक प्रकार की शिक्षा और साधना, जिसे आत्मा का दुर्विकास कहना चाहिये, उसे ऐसा बना देगी कि वह भौतिक उन्नति से प्राप्त होने वाले वैभव को केवल अपने ही सुख-आराम मे लगायेगा। इस वैभव के द्वारा पड़ोसियों के जीवन मे भी सुख आनन्द उत्पन्न करें—इसकी उसे तनिक भी चिन्ता न होगी। वह इस वैभव का उपयोग पूर्ण मात्रा में स्वार्थ-वृत्ति से युक्त होकर करेगा। वह इस ऐश्वर्य और सम्पत्ति का भोग करते हुए विलासी, विषय-लोलुप, इन्द्रियों का दास और शिश्नोदर-परायण बन जायेगा। और इस विलास तथा विषय-लोलुपता के परिणाम-स्वरूप अशक्त, दुर्बल और रोगी बन जायेगा। वह भौतिक उन्नति से प्राप्त होने वाली शक्ति को भी दूसरों के अधिकार हड़पने में, उन्हें सताने मे, उन्हें दास बनाने मे, उनके सुख नष्ट करने में, उनका धन छीनने में, उन पर अन्याय अत्याचार करने मे ही लगायेगा। वह अपनी इस शक्ति से संसार को स्वर्ग-धाम न बना कर नरक की भट्टी बनाने का यत्न करेगा।

परन्तु हमारे आत्मा की एक दूसरे प्रकार की शिक्षा और साधना, [illegible] विकास, उसे ऐसा बना देगी कि वह भौतिक उन्नति से प्राप्त होने

वाले वैभव से अपने जीवन को तो आनन्द-युक्त बनायेगा ही साथ ही उससे वह पड़ोसियों के जीवन मे भी सुख की गङ्गा बहा देगा। । इस वैभव के सेवन में स्वार्थ के साथ-साथ परार्थ की भावना भी उसमें भर-पूर मात्रा मे विद्यमान रहेगी। वह इस वैभव का सेवन पूर्ण संयम के साथ करेगा। उसका अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण विजय और वशित्व होगा। इस सयम और इन्द्रिय-जयित्व के कारण वह भोगी, विलासी, विषय-लम्पट और शिश्नोदर-परायण नहीं बनेगा। और अशक्ति, दुर्बलता और रोग कभी उसके पास नहीं फटकेंगे। भौतिक उन्नति से प्राप्त होने वाली शक्ति को वह अन्याय के विरुद्ध लड़ने मे, पीडितों की रक्षा में, दलितों के उद्धार में, निराश्रितों को आश्रय देने मे, दासों को स्वतन्त्र बनाने में, अधिकार-हीनों को अधिकार दिलाने में, दुखियों को सुखी बनाने में, बल-हीनों को सबल बनाने में, प्रयोग करेगा। वह मनुष्य-मात्र को, मनुष्य-मात्र को ही नहीं प्रत्युत प्राणि-मात्र को, वेद के शब्दों मे अमर परमात्मा के पुत्र समझ कर—'शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा.' (ऋग्० १० । १३ । १)—अपने भाई समझेगा। और अपने सारे वैभव को तथा अपनी सारी शक्ति को अपने इन भाइयों को सुखी बनाने मे, इनके अधिकारों की रक्षा करने में, इन्हें उन्नत करने में, अन्याय-अत्याचार से इन्हें बचाने मे व्यय करेगा।

एक प्रकार की शिक्षा और साधना, एक प्रकार की संस्कृति, हमारे आत्मा को राक्षसी बना देती है। और तब हम जो कार्य करते हैं वे राक्षसों के से घोर कार्य होते हैं। तब हम रावण के मार्ग पर चलने लगते हैं। परन्तु एक दूसरे प्रकार की शिक्षा और साधना, एक दूसरे प्रकार की संस्कृति, हमारे आत्मा को दिव्य—देवों का सा—बना देती है। और तब हम जो कार्य करते हैं वे देवों के से पवित्र और मंगलकारी कार्य होते हैं तब हम देव-पुरुष भगवान् रामचन्द्र के मार्ग पर चलने लगते हैं। प्रश्न यह है कि बड़े कष्ट और परिश्रम से प्राप्त की हुई आज की हम स्वतन्त्रता के वातावरण से हम जो अपने राष्ट्र की उन्नति करेंगे और इससे हमें जो वैभव और शक्ति प्राप्त होगी उसका प्रयोग हम रावण के मार्ग पर चल कर करेंगे या भगवान् राम के मार्ग पर चल कर करेंगे? एक मार्ग संसार को नरक बनाने वाला है और दूसरा मार्ग संसार को स्वर्ग बनाने वाला है। आज का भारत धरती को नरक बनाने की राह पर चलेगा या स्वर्ग बनाने की राह पर?

पाश्चात्य जगत् की आधुनिक उन्नति और उसके दुष्परिणाम

इस युग के योरोप और अमरीका-निवासियों ने भौतिक क्षेत्र में जो उन्नति की है वह इतनी अद्भुत, महान् और आश्चर्य-जनक है कि उसे देख कर

उत्कर्ष को भी सहन नहीं कर सकते। वे एक दूसरे के वैभव, उत्कर्ष और प्रभाव को सहन न करके परस्पर ईर्ष्या करने लगते हैं। इस ईर्ष्या के परिणामस्वरूप उनमें परस्पर शत्रुता उत्पन्न हो जाती है। वे एक दूसरे को नीचा दिखाने और पराजित करने की तैयारी करते रहते हैं। उन में से बड़े राष्ट्र, अपना प्रभावक्षेत्र बढ़ाने के लिये अपने पड़ोसी छोटे राष्ट्रों की स्वतन्त्रता को रौंदते रहते हैं। इन बड़े राष्ट्रों की परस्पर के प्रति ईर्ष्या और शत्रुता की वृत्ति उन्हें प्रायः बीस-बीस, तीस-तीस साल के अन्तर पर भयङ्कर युद्धों में प्रवृत्त करती रहती है। इन युद्धों में धन और जन की जो हानि होती है और जनता को जो भीषण कष्ट भोगने पड़ते हैं उनका यहां विस्तार से वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है। इतिहास का प्रत्येक विद्यार्थी उनसे भली-भांति परिचित है। पिछली शताब्दियों में तो युद्धों से होने वाली यह भयङ्कर हानि और ये कष्ट योरोप की जनता को ही सहने पड़ते थे। परन्तु इस शताब्दी में तो वैज्ञानिक उन्नति और तज्जन्य यातायात एवं समाचार-प्रेषण के अद्भुत साधनों के आविष्कारों के कारण धरती के सब देश एक दूसरे के इतने निकट हो गये हैं कि सारी धरती एक नगर सा बन गई है और एक राष्ट्र की गति-विधि का प्रभाव तत्काल विश्व के सब राष्ट्रों पर पड़ता है। इस लिये अब योरोप के दो देशों में होने वाले युद्ध झट प्रायः सारी धरती के युद्ध बन जाते हैं। इन युद्धों में पृथिवी के प्रायः सभी राष्ट्र दो भागों में बटकर एक दूसरे से लड़ने लगते हैं और एक दूसरे के संहार पर तुल जाते हैं। इन युद्धों की भीषणता धरती के मानवमात्र को सहनी पड़ती है। आज की विराट् वैज्ञानिक उन्नति ने लड़ने वालों के हाथ में जो प्रलयङ्कर शस्त्रास्त्र दे दिये हैं, उन से आज के युद्धों की त्रासकारी भीषणता और भी बढ़ जाती है। आज के युद्धों की प्रलयङ्कर भीषणता का अनुभव गत दो विश्व-युद्धों में जगत ने भली-भांति कर लिया है। इन युद्धों में गांव-के-गांव और नगर-के-नगर धराशायी कर दिये गये हैं। अरबों-खरबों रुपयों की सम्पत्ति का विध्वंस हुआ है। करोड़ों आदमी मारे गये हैं। लाखों बच्चे अनाथ बना दिये गये हैं। लाखों माता-पिता सन्तान-हीन कर दिये गये हैं। लाखों बहिनें बिना भाइयों की और लाखों भाई बिना बहिनों के कर दिये गये हैं। लाखों पत्नियें विधवा बना दी गई हैं। लाखों व्यक्ति अङ्ग-हीन करके सदा के लिये निकम्मे कर दिये गये हैं। करोड़ों व्यक्तियों के घर-बार उजाड़ दिये गये हैं। योरोप और अमरीका के लोगों की यह रक्त-पिपासा अभी भी शान्त नहीं हुई है। तीसरे विश्व-युद्ध की फिर तैयारियें हो रही हैं। इस युद्ध के लिये और भी प्रचण्ड शस्त्रास्त्रों का आविष्कार किया जा रहा है। इस युद्ध के कारण धरती के मनुष्य-मात्र को जो कष्ट और विपत्ति